सत्य मार्ग की खोज, सीरीज़ - 31

पलटो अपने रब की ओर

जमाअत इस्लामी हिन्द

दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, ओखला, नई दिल्ली-110025

09650022638

www.islamsabkeliye.com

www.facebook.com/islamsabkeliyeofficial

ईश्वर, अति दयावान, अत्यंत कृपाशील के नाम से

पलटो अपने रब की ओर

कोरोना एक भयानक आपदा है

हमारे देश भारत में कोरोना के प्रकोप ने अत्यंत भीषण रूप धारण कर लिया है और बहुत ज़्यादा लोग इससे पीड़ित हुए हैं। एक बहुत बड़ी संख्या है जो हमसे बिछड़ भी गई। इसका प्रकोप अभी समाप्त भी नहीं हुआ था कि 'फंगस' के विभिन्न रूपों में एक भीषण नई महामारी प्रकट हो गई है। आगे अन्य नई आपदाएं भी प्रकट हो सकती हैं। कोरोना का इलाज ढूंढने में हमें कुछ सफ़लता मिली,पर बहुत संभव है कि भविष्य की किसी नई आपदा में हमें इलाज ढूंढने का समय ही न मिल पाए और हम सब उसका शिकार हो जाएं।

यह ईश्वर का नहीं, हमारा इम्तिहान है

कोरोना आपदा जितनी तीव्रता से फैली है, उतनी ही तीव्रता से कुछ प्रश्न भी देश के वातावरण में फ़ैल गए हैं। ईश्वर हमें कष्ट में क्यों डाल रहा है? क्या वह अपने बन्दों से प्रेम नहीं करता? उसका कोई अस्तित्व है भी या नहीं?

उसके अस्तित्व, दया और प्रेम की निशानी तो चारों ओर फैली है। इनको पहचानने के लिए देखने वाली आँखें और समझने वाले दिल चाहिए। स्वयं हमारा जीवन उसके अस्तित्व की गवाही देता है। हमारी एक-एक सांस उसकी दया का प्रतीक है। इस विशाल संसार का कण-कण उसके प्रेम और उसकी अपार शक्ति की गवाही दे रहा है।

कोरोना और इस जैसी अन्य आपदाएं और संकट तो हम इंसानों के लिए चेतावनी का एक माध्यम होते हैं। इनका उद्देश्य हमें नींद से जगाना और ग़फ़लत से निकालकर ईश्वर के अस्तित्व और उसकी प्रभुसत्ता का स्मरण कराना होता है। क्या यह सत्य नहीं है कि हम और हमारा पूरा समाज अपने सृष्टिकर्ता और पालनहार की उपेक्षा में जीवन व्यतीत कर रहे हैं ?

क्या है यह जीवन? मृत्यु क्या है? इसके बाद क्या होगा?

हमारा जीवन एक इम्तिहान है और यह स्वयं ईश्वर के अस्तित्व और उसकी प्रभुसत्ता की पहचान है। उसी की क्षत्र-छाया में हमारा जीवन व्यतीत हो रहा है और हम सब अपने अंतिम पड़ाव की ओर अग्रसर हैं।

"बड़ा बरकतवाला है वह जिसके हाथ में सारी बादशाही है और वह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है। जिसने पैदा किया मृत्यु और जीवन को, ताकि तुम्हारी परीक्षा करे कि तुममें

कर्म की दृष्टि से कौन सबसे अच्छा है। वह प्रभुत्वशाली, बड़ा क्षमाशील है।" *(कुरआन 67:1-2)*

मृत्यु इस जीवन का नहीं, इसमें लिए जा रहे इम्तिहान का अंत है। भयानक भूल होगी मृत्यु को जीवन का अंत समझ बैठना। इम्तिहान का परिणाम भी निकलना है और उसका प्रतिफल भी मिलना है। यह मृत्यु-पश्चात जीवन में ही संभव हो सकता है।

संसार की वास्तविकता को भुलाकर, उसकी रंगरलियों का शिकार हो जाने वालों को झंझोड़कर जगाने और वास्तविकता का बोध कराने का प्रावधान ईश्वर ने भलीभांति कर रखा है। कोरोना या इस जैसी अन्य आपदाएं जैसे भूकंप, आंधी, बाढ़, सूखा आदि उसके इसी प्रावधान का अंग हैं। बुद्धिमानी इसी में है कि इनको इसी रूप में लिया जाए और जीवन में हो गए भटकाव से निकलकर जीवन-रूपी गाड़ी को फ़िर सही दिशा में डालने का प्रयत्न किया जाए। यही इन आपदाओं का सन्देश है।

मृत्यु प्राकृतिक है और अपने निर्धारित समय पर सबको आनी है। पर जब मृत्यु विकराल रूप धारण कर ले, और हर तरफ़ मौत का तांडव छा जाए, तो इसे प्राकृतिक नहीं कहा जा सकता। इसमें छिपे सन्देश को पढ़ा जाना चाहिए। इसकी ओर से आँख और कान बंद कर लेना, जीवन की सच्चाई की उपेक्षा करते हुए अपने भटकाव पर जमे रहने की मूर्खतापूर्ण घोषणा है। यह ईश्वर को चैलेंज करने के समान है।

याद रखिए, यह संसार हमारा नहीं, ईश्वर का है

इस संसार में हम स्वयं अपनी इच्छा से नहीं आए हैं, हमें यहाँ पैदा किया गया है। यहाँ उपलब्ध संसाधन हमने नहीं बनाए हैं, इनकी रचना ईश्वर ने की है। मृत्यु पर हमारा कोई नियंत्रण नहीं है, न हम इसपर अंकुश लगाने की क्षमता रखते हैं। ईश्वर जब चाहता है हमारे प्राणों को हर लेता है और हम एकदम असहाय होते हैं। यह सब इस बात का खुला प्रमाण है कि हम उसी एक सर्वशक्तिमान ईश्वर की प्रभुसत्ता में जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

"अल्लाह ही है जिसने तुम्हें पैदा किया, फिर तुम्हें रोज़ी दी; फिर वह तुम्हें मृत्यु देता है; फिर तुम्हें जीवित करेगा। क्या तुम्हारे ठहराए हुए साझीदारों में भी कोई है, जो इन कामों में से कुछ कर सके? महान और उच्च है वह उससे जो साझी वे ठहराते हैं।" *(कुरआन 30:40)*

जन्म, मृत्यु और हमको मिलने वाली रोज़ी, सब ईश्वर के कंट्रोल में हैं, और हम उसके इस निर्णय के समक्ष सदा नतमस्तक रहते हैं। तो

इस आयत में बताई उसकी चौथी सच्चाई, मृत्युपश्चात जीवन, को भी हम क्यों स्वीकार नहीं कर लेते?

"तुम अल्लाह के साथ अविश्वास की नीति कैसे अपनाते हो, जबकि तुम निर्जीव थे तो उसने तुम्हें जीवित किया, फिर वही तुम्हें मौत देता है, फिर वही तुम्हें जीवित करेगा, फिर उसी की ओर तुम्हें लौटना है?" *(कुरआन 2:28)*

कब तक हम मृत्योपरांत जीवन के अस्तित्व का इनकार करते रहेंगे?

स्वास्थ, बीमारी और इलाज: ईश्वर की निशानियाँ हैं

हमारा स्वास्थ ईश्वर की एक महान अनुकम्पा है। बीमारी उसकी इस महान अनुकम्पा से वंचित हो जाने का नाम है। बीमारी बोध कराती है कि उसकी अनुकम्पाओं से उदासीन रहना बुद्धिमानी नहीं, उसके प्रति सदा आभारी होने की आवश्यकता है।

ईश्वर ने हर बीमारी के साथ उसका इलाज भी बनाया है, पर इसकी खोज के लिए उसी की प्रदान की हुई बुद्धि और विवेक की आवश्यकता पड़ती है। इलाज खोज लेना भी उसकी इच्छा और अनुमति से ही होता है और इसमें गर्व और अहंकार का कोई स्थान नहीं है। यह भी उसकी महान अनुकम्पा का एक रूप है और इसपर भी उसका गुणगान होना चाहिए।

ईश्वर और उसकी अनुकम्पाओं की निशानी जहाँ इंसान के शरीर और उसके स्वास्थ में हैं, वहीं पृथ्वी और आकाश में भी चारों ओर उसकी निशानियाँ फैली हुई हैं।

"और धरती में विश्वास करने वालों के लिए बहुत-सी निशानियाँ हैं, और, स्वयं तुम्हारे अपने आप में भी। तो क्या तुम देखते नहीं? और आकाश में ही तुम्हारी रोज़ी है और वह चीज़ भी जिसका तुमसे वादा किया जा रहा है।"

(कुरआन 51:20)

अपने अत्यंत कृपाशील और दयावान ईश्वर को पहचानने के लिए निशानियों की कमी नहीं है। हमने ही आँखें बंद कर रखी हैं।

कष्ट में उसे याद करते हैं, फिर भुला देते हैं

कष्ट और संकट के समय ईश्वर को याद करना और उसके उपरान्त उसको भुला बैठना, इंसान सदा से इसी पथभ्रष्टता का शिकार रहा है, और आज भी है।

"मनुष्य को जब कोई तकलीफ़ पहुँचती है, वह लेटे या बैठे

या खड़े हमको पुकारने लग जाता है। किन्तु जब हम उसकी तकलीफ़ उससे दूर कर देते हैं तो वह इस तरह चल देता है मानो कभी कोई तकलीफ़ पहुँचने पर उसने हमें पुकारा ही न था। इसी प्रकार मर्यादाहीन लोगों के लिए जो कुछ वे कर रहे हैं सुहावना बना दिया गया है।" (कुरआन 10:12)

कोरोना की यह भयानक आपदा एक अवसर है उसकी ओर पलटने का, उसके प्रकोप से क्षमायाचना करने का। यह निश्चिन्त बैठने का समय नहीं है।

"फिर क्या वे लोग जो ऐसी बुरी-बुरी चालें चल रहे हैं, इस बात से निश्चिन्त हो गए हैं कि अल्लाह उन्हें धरती में धँसा दे या ऐसे मौक़े से उनपर यातना आ जाए जिसका उन्हें एहसास तक न हो?" (कुरआन 16:45)

सोचने की बात

पूरे विश्व में छाई हुई आपदा, एक के पीछे एक आने वाले अन्य संकट, भूकम्प में हज़ारों की मृत्यु, हर तरफ समाज में फैला भ्रष्टाचार, ज़ुल्म और अन्याय। यह सब प्रेरित करते हैं कि हम घोर मंत्रणा करें कि कहीं यह सब हमारे कर्मों का दुष्परिणाम तो नहीं?

"थल और जल में बिगाड़ फैल गया स्वयं लोगों ही के हाथों की कमाई के कारण, ताकि वह उन्हें उनकी कुछ करतूतों का मज़ा चखाए, कदाचित वे बाज़ आ जाएँ।" (कुरआन 30:41)

इतिहास साक्षी है कि जब भी संसार में अत्याचार और भ्रष्टाचार की अति हुई है और इंसान ने नैतिकता की सारी सीमाओं को तोड़ा है, ईश्वर की ओर से प्रकोप का भागी बना है।

"कितनी ही बस्तियाँ हैं जिन्हें हमने विनष्ट कर दिया इस दशा में कि वे ज़ालिम थीं, तो वे अपनी छतों के बल गिरी पड़ी हैं। और कितने ही परित्यक्त (उजाड़) कुएँ पड़े हैं और कितने ही पक्के महल भी!" (कुरआन 22:45)

"तेरे रब की पकड़ ऐसी ही होती है, जब वह किसी ज़ालिम बस्ती को पकड़ता है। निस्संदेह उसकी पकड़ बड़ी दुखद, अत्यन्त कठोर होती है।" (कुरआन 11:102)

यह बात समझना कोई मुश्किल नहीं है कि इस संसार में जितनी भी आपदा आए, जितना भी कष्ट हो और कितने भी दुख हों, सब एक सीमित समय के लिए होते हैं और समय के साथ धूमिल पड़ जाते हैं या समाप्त हो जाते हैं। जीवन के समस्त कर्मों का हिसाब इस संसार में संभव नहीं है। इसका प्रावधान ईश्वर ने मृत्युपश्चात जीवन,

अर्थात आख़िरत में रखा है जहां इंसान के एक-एक कर्म का हिसाब होगा।

क्या करें?

कोरोना के इस संकट के समय में भी कुछ लोग हैं जो इस आपदा को अपनी जेब भरने का अवसर समझ रहे हैं। दवाएं, इंजेक्शन, ऑक्सीजन वह अन्य वस्तुओं के दाम इतने अधिक बढ़ गए हैं कि एक आम नागरिक की क्षमता से परे हो गए हैं। लोग मर रहे हैं तो मरे, उनको इंसानों को लूटने में कोई संकोच नहीं है। क़ानून व्यवस्था इनको रोकने में असक्षम हो गई है। तो क्या ऐसे लोगों को सुधारने का कोई उपाय नहीं है?

इस्लाम के पास इसका उपाय है। उसका मानना है कि इंसानों को नैतिकता के शिखर पर ले जाने और समस्त बुराइयों से बचाने के लिए तीन मौलिक धारणाओं को स्वीकार करना आवश्यक है।

1) **तौहीद:** सर्वोच्च और सर्वशक्तिमान, ईश्वर-अल्लाह पर आस्था, जो सबके कर्मों से भलीभांति परिचित है और सबको दण्डित करने की शक्ति रखता है।
2) **रिसालत(ईश्दूतत्व):** पैग़म्बरों पर आस्था और अनुसरण, जो इंसानों को सीधा और सच्चा मार्ग पहुँचाने और चलकर दिखाने के लिए भेजे गए थे और जिनको ग्रन्थ भी प्रदान किए गए थे।
3) **आख़िरत:** इस बात पर आस्था कि यह जीवन एक इम्तिहान है और इसका परिणाम मृत्योपरांत जीवन में निकलेगा। सफ़ल होने वालों को स्वर्ग की प्राप्ति होगी और असफ़ल होने वालों को नरक की आग की यातना झेलनी होगी।

इस्लाम इंसानों का बनाया हुआ नहीं, बल्कि अल्लाह ईश्वर की ओर से अवतरित जीवन व्यवस्था है जो इंसानों को सफ़लता की ओर ले जाती है। इन ईश्वरीय प्रावधान में ही सबका कल्याण छिपा है और अंतिम ईशग्रंथ कुरआन में यह पूर्ण रूप से सुरक्षित है। कुरआन सबके लिए है और सबको इसका अध्ययन अवश्य करना चाहिए।

"वास्तव में यह क़ुरआन वह मार्ग दिखाता है जो सबसे सीधा है। और जो लोग इसे स्वीकार कर अच्छे कर्म करने लगें, उन्हें यह शुभ सूचना देता है कि उनके लिए बड़ा बदला है।" *(कुरआन 17:9)*

अधिक जानकारी के लिए हमसे संपर्क करें।

dawah.jih@gmail.com